आज कि मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date: 27-08-14

निराकार, परमपिता-परमात्मा, बेहद के ज्ञान सागर, अपने ज्ञान से हमें आत्मा-अभिमानी बनाने वाले बाबा ने हम बच्चों से कहा, मीठे बच्चे - मैं विदेही बाप तुम देहधारियों को विदेही बनाने के लिए पढ़ाता हूँ, यह है नई बात जो बच्चे ही समझते है.

सत्य गीता ज्ञान दांता, परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा के महावाक्यों में रोज एक वाक्य बाबा हम बच्चों प्रति जरूर उच्चारण करते है - मनमनाभव जिसका मतलब होता है, खुद को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो. क्योंकि बाबा चाहते है कि हम अभी आत्मा-अभिमानी बने और बाबा को याद करें जिसे हमारी आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाये.

बाबा जानते है कि हम बच्चे, सारे कल्प में अभी ही, संगमयुग पर आत्मा-अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करते है और लास्ट ६३ जन्म हमने देह-अभिमानी बनकर पार्ट बजाया है तो अभी आत्मा-अभिमानी बनना इतना ईजी नहीं होता. सतयुग-त्रेता में हम आत्माये आत्मा-अभिमानी नेचरल रुप में रहते है, कोई पुरुषार्थ नहीं करना पड़ता, क्योंकि वह तो अभी के पुरुषार्थ कि प्रालब्ध है. इसलिए बाबा हमें हररोज मुरली में इस बात को बार-बार याद कराते है कि अभी तुम आत्मा-अभिमानी बनो और बाप को याद करो.

आज कि मुरली में से कुछ पाइन्ट्स हम आत्म-अभिमानी बनकर, यह फिलिंग के साथ पढ़ेंगे कि बाबा से डायरैक्ट पढ रहे है तो हमें ऑटोमेटिकली बाबा कि याद भी रहेगी और आत्मा-अभिमानी बनने कि प्रैक्टिस भी होती जायेगी.

- बाबा ने कहा, इसको विचित्र रुहानी पढ़ाई भी कहा जाता है. नई दुनिया सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक देहधारी मनुष्य ही एक-दूसरे को पढ़ाते है, ऐसा कभी नहीं होगा कि विदेही बाप या रुहानी बाप पढ़ाते हो. सिर्फ संगम पर ही रुहानी बाप खुद आकर कहते हैं, इस ब्रह्मा द्वारा मैं तुम्हें पढाता हूँ.

- ज्ञान का सागर, शांति का सागर, सब आत्माओं का बाप भी वहीं है. तो यह समझने कि बात है. देखने में तो बाबा आते नहीं. आत्मा ही है मुख्य और वह अविनाशी है, शरीर विनाशी है. अभी वह अविनाशी आत्मा बैठ तुम्हें पढ़ाती है. भले तुम सामने देखते हो कि यह साकार में तो ब्रह्मा का शरीर बैठा है, परन्तु यह तुम जानते हो कि यह ज्ञान कोई देहधारी नहीं देते है. ज्ञान देने वाला तो स्वयं विदेही बाप है.

- वह बाप खुद बैठ पढ़ाते है. कहते हैं मैं सब आत्माओं का बाप हूँ, जिसको तुम देख नहीं सकते हो. तुम समझते हो वह विदेही है. ज्ञान, आनंद और प्रेम का सागर है.

- बाप खुद तुम्हें समझाते है - मैं कैसे आता हूँ? किसका आधार लेता हूँ? मैं कोई गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ. मैं कभी मनुष्य या देवता नहीं बनता हूँ. मैं तो सदैव अशरीरी ही रहता हूँ. मेरा ही ड्रामा में यह पार्ट है जो मैं कभी पुनर्जन्म में नहीं आता हूँ. तो यह समझने कि बात है, मुझे तुम देख नहीं सकते.

- बाबा कहते है - बच्चे तुम मुझो मत. बाप, तुम्हें बिगर पुछे ही सबकुछ साफ-साफ समझाते है, तो तुम्हें पूछने कि दरकार ही नहीं. मैं इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही अवतार लेता हूँ. मेरा जन्म ही वन्डरफूल है. तुम बच्चों को भी वन्डर लगता है, बाबा हमें पढ़ाकर कितना बड़े ते बड़ा इम्तहान पास कराते है, हमें सारे विश्व का मालिक बनाते हैं. बड़ी वन्डरफूल बात है ना.

- बाप कहते है - है आत्माओं, हर ५ हजार वर्ष बाद में तुम्हारी सर्विस में आता हूँ. मैं तुम आत्माओं को ही पढ़ाता हूँ. कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे तुम्हारी सेवा में आता हूँ. याद है तुम्हें, तुम आधाकल्प मुझे पुकारते आये हो - हे बाबा, हे पतित-पावन आओ. तो बाबा को भी आना पड़ेगा पतितो को पावन बनाने, इसलिए ही कहा जाता है - अकालमूर्त-सत बाबा, अकालमूर्त-सत टीचर, अकालमूर्त-सतगुरु.

- बाबा आकर क्या करते है - सिर्फ कहते है मनमनाभव. तुमको वही सतगुरु अकालमूर्त बैठ समझाते है इस ब्रह्मा के तन द्वारा कि अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो, तो तुम आत्माये तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे.

- बाप कहते अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है तो आत्मा को ही देखो. इन जिस्मानी नेत्रों से देखो ही नहीं. हम सब आत्माये भाई-भाई है. हम अशरीरी आये थे, अब फिर अशरीरी बनकर घर जाना है. आत्मा सतोप्रधान आई थी अब फिर वापस सतोप्रधान बनकर घर जाना है.

ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email:
a.brahmin.soul@gmail.com .